आज का पुरुषार्थ, 14 May 2022

From: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" सर्वशक्तिमान के साथ निरंतर योगयुक्त रहना है तो जीवन में पवित्रता, स्वच्छता, सरलता को अपनाकर पुण्यात्मा बनने का पुरुषार्थ करे "*

हम सभी कितने **भाग्यवान** है, जो विश्व के मालिक हमारे मेहमान बनकर आये है। हमने उनको बुलाया था और वो आ गये। बुलाते आये, वायदा भी याद करते आये थे कि ...

"जब-जब धर्म की ग्लानि होगी भगवान आयेंगे "

अब वो आ गये और कह रहे ...

" बच्चे! मुझ सर्वशक्तिमान बाप से अपना नाता जोड़ो तो तुम्हे शक्तियाँ मिल जायेंगी .. तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे .. तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनो तो तुम देवता बन जाओगे .. तुम्हारे विकर्म भी हल्के हो जायेंगे "

हम **सर्वशक्तिमान** से योग लगाकर उनसे इतनी **शक्तियाँ** लेते है कि सारे विश्व पर राज करते है। **दो युग** तक यह संसार आपके योगबल से देवताओं की नगरी बन जाता है।

जहाँ दुःख अशान्ति का नाम नहीं होता, जहाँ सम्पूर्ण **सम्पन्नता** होती है, जहाँ **प्रकृति स्वयं हमारी मददगार होती है**, हमारे अधीन होती है, हमें सर्वस्व प्रदान करती है।

तो हम सर्वशक्तिमान से **बुद्धियोग** लगाकर उनसे शक्तियाँ प्राप्त करते रहे। Important बात है, बुद्धियोग इधर-उधर से हटाकर अब एक में लगाना है।

जन्म-जन्म मन भटकता रहा। हमने उसका परिणाम भी देख लिया। अब तो हमें अपनी **मन और बुद्धि को स्थिर करना है** वह भी एक में। इसलिए एक का स्वरुप ही हमें दिखाई देते रहे।

" वहीं एक, बस .. सर्वशक्तिमान, निराकार, ज्ञानसूर्य हमारे सामने चमक रहा है .. उसके शक्तियों के वायब्रेशन्स मुझमें समा रहे है "

इस feeling को इस practise को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाते चले। और साथ-साथ यदि हम यह भी याद रखते कि ...

" बाबा हमारे साथ है .. सर्वशक्तिमान हमारे साथ है "

... तो भी उसकी शक्तियाँ हममें प्रवेश करती रहती है।

तो आईये हम सभी श्रेष्ठ योगी बने। **योगी बनने के लिए** .. पवित्रता बहुत सुन्दर चाहिए .. मन को सभी उलझनों से मुक्त रखके सरलचित्त बनना है .. अपने बुद्धि को बहुत clean स्वच्छ रखना है .. और **पुण्य कर्मों** पर बहुत ज्यादा ध्यान देना है।

यह चार पिलर बना ले अपने **श्रेष्ठ योगी जीवन** के लिए। तो हमारा बुद्धि **एकाग्र** हो जायेगा। इसके बिना हम योग में **स्थिर** नहीं हो पायेंगे।

यदि हमारे पास प्योरीटी अच्छी नहीं, मन भटकता है, वासनायें खींचती है, **कर्मेन्द्रियों** के रस आकर्षित करते है .. तो हम **परमात्मा** के ओर आकर्षित नहीं हो पायेंगे।

यदि हमारे बुद्धि में बहुत गंदगी आ गई है, तो जहाँ बुद्धि में गंदगी है, वहाँ परमात्मा का वास नहीं हो सकता।

हमारी बुद्धि भी बहुत पवित्र होनी चाहिए। और अगर हम छोटे-मोटे विकर्म करते रहेंगे, किसी को कष्ट पहुँचायेंगे, तो हमारी बुद्धि परमात्मा के स्वरुप में स्थिर नहीं होगी।

क्योंकि **पाप बुद्धि को भारी कर देता है**, ऊपर उड़ने नहीं देता है। तो यह 4 pillars हम धारण करे। और आज सारा दिन बहुत अच्छा अभ्यास करेंगे .

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ .. सर्वशक्तिमान मेरे सम्मुख है .. उसकी शक्तियों की किरणें मुझमें समा रही है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org